Paper - II

MT

2017 1100

MT - HINDI (ENTIRE) (SECOND OR THIRD LANGUAGE) (H) - SEMI PRELIM - II - PAPER - II

Time : 3 Hours **Model Answer Paper** **Max. Marks : 80**

विभाग 2 - गद्य

उ.1. (क) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) i) **आकृति पूर्ण कीजिए।** **1**

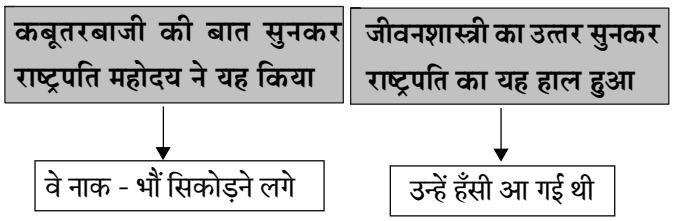

ii) **आकृति पूर्ण कीजिए।** **1**

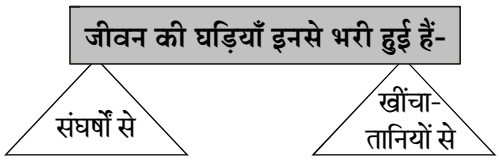

2) i) **समझकर लिखिए।**

(1) बाज़ार । ½

(2) कबूतरबाजी का मैच । ½

ii) **उपर्युक्त गद्यांश से दो ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हो।**

(1) **राष्ट्रपतिभवन** - विदेशी विद्वान कहाँ पहुँच गए ? ½

(2) **सेक्रेटरी** - जीवनशास्त्री के घर उन्हें बुलाने राष्ट्रपति का कौन सा अधिकारी गया ? ½

3) i) **गद्यांश में आए विरुद्धार्थी शब्द है -**

(1) बढ़िया × घटिया ½

(2) जरूरी × बेजरूरी ½

ii) **समानार्थी शब्द लिखिए ।**

(1) लापता - गायब ½

(2) आनंद - खुशी ½

4) कुछ लोग मनोरंजन को अर्थहीन और समय की बरबादी समझते हैं । परंतु यह उनकी नासमझी है । सच तो यह है कि मनोरंजन से मनुष्य का मन आनंद से भर जाता है । जीवन में मनोरंजन न होने पर स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ता है । जिंदगी आनंदमय हो इसके लिए मनोरंजन जरूरी है । इसलिए उचित समय पर आनंद लेते रहना चाहिए । **2**

उ.1. (ख) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) i) **आकृति पूर्ण कीजिए।** **1**

(1) **इनके अनुरूप बाँटा तपस्या का फल** पात्र के अनुरूप

(2) असहयोग आंदोलन
इस ऐतिहासिक आंदोलन का नाम परिच्छेद में आया है।

ii) **उत्तर लिखिए।**

(1) एक तपस्या (2) आती-जाती हल करती एक समस्या **1**

2) i) **उपर्युक्त गद्यांश से दो ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हो।**

(1) **तपस्या** - बापू की छाती की हर साँस क्या थी ? ½

(2) **आनंदभवन** - गांधीजी कहाँ ठहरे थे ? ½

ii) **उचित पर्याय चुनकर लिखिए।**

(1) नेताओं की दैनिक सुविधाओं की देख-रेख करने के लिए। ½

(2) पानी ले जाने के लिए जो बाल्टी बची हुई थी, उसका हैंडिल निकल गया था। ½

3) पहेली में से विलोम शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

i) पात्र × अपात्र ii) जाड़ा × गर्मी **1**

iii) पास × दूर iv) आए × गए **1**

4) समय बड़ा मूल्यवान होता है। एक बार जो समय चला गया वह वापस नहीं आता। अत: हमें अपने जीवन में समय का सदुपयोग करना चाहिए। हमारा हर कार्य अपने समय पर और सुचारुरूप से पूर्ण हो, इसके लिए हमें **2**

समय का पूरा ध्यान रखना पड़ता है। यदि हम अपने कार्य को निर्धारित समय पर नहीं करते हैं तो वह कार्य या तो छूट जाता है या विलंब से होने के कारण हमारे शेष कार्य बाधित हो जाते हैं, जिससे हमारा नुकसान होता है। इसलिए निर्धारित समय पर कार्य न करना समय के साथ दगाबाजी है।

उ.1. (ग) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) निम्नलिखित विधानों में से सही विधान चुनकर लिखिए ।

i) रणजीत सिंह का जन्म एक गाँव में हुआ था । ½

ii) एक समीक्षक ने रणजीत सिंह को क्रिकेट का बादशाह कहा है । ½

2) उचित विकल्प चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए ।

i) एक प्रशंसक ने रणजी को एक करोड़पति सेठ की उपमा दी है, क्योंकि **वे मैदान में सिक्कों की तरह रनों की बौछार करते थे ।** ½

ii) रणजी जीवनभर अविवाहित रहे, क्योंकि **वे क्रिकेट को ही अपनी जीवनसंगीनी मानते थे ।** ½

3) एक आदर्श खिलाड़ी अनुशासन को महत्त्व देता है । वह खेल के नियमों का पालन करता है । वह अपनी टीम के साथियों के साथ अच्छा व्यवहार करता है । वह अपने नए साथियों को प्रोत्साहन देकर उनका हौसला बढ़ाता रहता है । आदर्श खिलाड़ी प्रतिपक्षी खिलाड़ियों को भी आदर देता है । वह खेल में हार - जीत को विशेष महत्त्व न देकर अपने खेल की उत्कृष्टता पर ध्यान देता है । कुमार रणजीत सिंह, ध्यानचंद, सचिन तेंडुलकर आदि के नाम आदर्श खिलाड़ियों में लिए जाते हैं । **2**

विभाग - 2 - पद्य

उ.2. (च) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) i) **आकृति पूर्ण कीजिए।** **1**

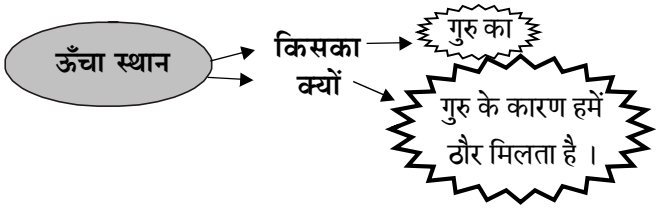

ii) **आकृति पूर्ण कीजिए।** **1**

(1)

(2)

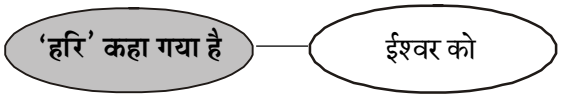

2) i) **पद्यांश पर आधारित दो प्रश्न तैयार कीजिए ।**

(1) कबीर ने किसे अंध कहा है ? ½

(2) किसके रूठने पर हमें ठौर नहीं मिलता ? ½

ii) **उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।**

(1) कबीरा ते नर **अंध** है, गुरु को कहते और। ½

(2) हरि रूठे गुरु ठौर है **गुरु** रूठे नहिं ठौर ।। ½

3) i) **समानार्थी शब्द लिखिए।**

(1) नर - मनुष्य (2) अंध - अज्ञानी **1**

ii) (1) आँख न ऊठना (2) आँखे फाड़कर देखना **1**

4) कबीर जी कहते हैं वे लोग जो गुरु को महत्त्व नहीं देते वे अज्ञानी हैं। उन्हें इस बात का पता नहीं कि ईश्वर के रूठ जाने से गुरु की शरण संभव है परंतु गुरु के रूठ जाने से कहीं भी शरण नहीं मिल सकती। **2**

उ.2. **(छ) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**

1) i) **आकृति पूर्ण कीजिए।**

(1) **1**

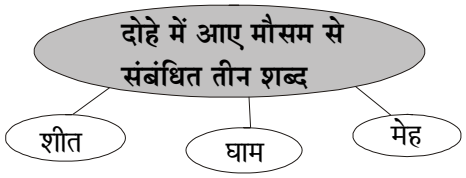

(2) **1**

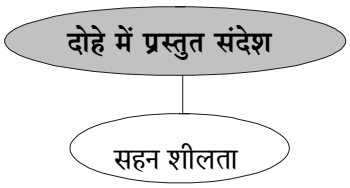

2) **समझकर लिखिए ।**

i) (1) मनुष्य को हर स्थिति का मुकाबला करने के लिए तैयार रहना चाहिए। ½

(2) मनुष्य को सहनशील बनना चाहिए। ½

ii) (1) सुख (2) दुख **1**

3) i) **दोहे में प्रयुक्त समानार्थक शब्द लिखिए।**
(1) शरीर - देह (2) पृथ्वी - धरती **1**

ii) **विलोम शब्द लिखिए।**
(1) धरती × आकाश (2) शीत × गर्मी **1**

4) रहीम जी सहनशीलता का संदेश देते हुए कहते हैं कि इस मानव शरीर को सुख हो या दुख जैसा भी पड़े वह सहते रहना चाहिए। जैसे कि धरती पर ठंडी, गर्मी और बरसात पड़ती है जिसे वह सहन करती रहती है। **2**

विभाग - 3 - पूरक पठन

उ.3. परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

1) i) (1) निमोनिया (2) कालरा (3) कैंसर **1**

ii) (1) एलोपैथी (2) होमियोपैथी **1**

2) भारतीय समाज में दो तरह के लोग रहते हैं। कुछ लोग बहुत अमीर हैं और कुछ लोग बहुत गरीब। बहुत अमीर लोगों के पास इतनी संपत्ति होती है कि वे सरकार को टैक्स देते-देते परेशान हो जाते हैं। उन्हें टैक्स की बीमारी लग जाती है। ऐसे लोगों की संख्या समाज में कम है। काफी सारे लोग ऐसे हैं जिन्हें खाने के लिए दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं होती है। ऐसे लोग टैक्स क्या भरेंगे ? वे तो भुखमरी से मर जाते हैं। समाज की इस विषमता को दूर करना अति आवश्यक है। **2**

विभाग - 4 - व्याकरण

उ.4. सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) i) **निम्नलिखित शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** **½**
साहित्य की **आलोचना** आलोचक करते हैं ।

ii) **अधोरेखांकित शब्द का भेद पहचानिए ।** **½**
सच्चाई - भाववाचक संज्ञा ।

2) i) **निम्नलिखित वाक्य शुद्ध करके लिखिए ।** **1**
मेरा कोई कसूर नहीं है ।

3) i) **सहायक क्रिया का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** **½**
कुछ लेना हो तो ले **लें** ।

	ii)	**सहायक क्रिया छाँटकर लिखिए ।** गई - (जाना) - सहायक क्रिया ।	½
4)		**प्रेरणार्थक क्रिया के रूप लिखिए ।** **मूल क्रिया** **प्रथम प्रेरणार्थक** **द्‌वितीय प्रेरणार्थक** जागना जगाना जगवाना	**1**
5)	i)	**अव्यय का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** **वाह !** सब भाजी टके सेर ।	**1**
	ii)	**अव्यय पहचानकर उसका भेद लिखिए ।** कि - समुच्चयबोधक अव्यय	**1**
6)		**कालपरिवर्तन कीजिए।**	**2**
	i)	आखिर वहाँ पत्रकार भी होते हैं ।	
	ii)	उसके आदमी ने बहुत मिन्नतों के बाद पीना छोड़ दिया था ।	
7)	i)	**मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में उचित प्रयोग कीजिए ।** **राहत की साँस लेना -** संतोष मिलना । **वाक्य** : बेटी की शादी होते ही लाला हरिराम ने **राहत की साँस ली ।**	**1**
	ii)	**अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए ।** नेता जी पर आरोप सिद्‌ध होते ही उनका तिलिस्म टूट गया ।	**1**

विभाग - 5 - रचना

उ.5. सूचना : आवश्यकतानुसार परिच्छेद में लेखन अपेक्षित है : **5**

1) निम्नलिखित में से किसी एक पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए।

संतोष तिवारी
लक्ष्मीनगर,
अमरावती।
दिनांक - 5 मार्च, 2017

सेवा में,
श्रीमान व्यवस्थापक जी,
शीतल बुक डिपो, मंगलवार पेठ,
पूना ।

विषय : पुस्तकों की कम प्रतियों की प्राप्ति तथा फटी पुस्तकों के लिए शिकायत पत्र ।

माननीय महाशय,

मैं आपका नियमित ग्राहक हूँ । इस पत्र के द्‌वारा मैं आपका ध्यान मँगवाई गई पुस्तकों की कम प्रतियों तथा तीन फटी पुस्तकों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ । मैंने दस दिन पहले ही आपके यहाँ से पुस्तकें मँगवाई थीं । बड़े दुख के साथ लिखना पड़ रहा है कि पुस्तकें संख्या में अपूर्ण हैं और कुछ प्रतियाँ फटी हुई हैं । हिंदी व्याकरण और अंग्रेजी की दस-दस प्रतियाँ मँगवाई थीं लेकिन आठ-आठ ही प्राप्त हुई हैं । इसके अलावा 'भारत की खोज' और वीर सावरकर की जीवनी तथा 'गोदान' पुस्तकों की प्रतियाँ फटी हुई हैं । ये तीनों पुस्तकें पोस्ट पार्सल के माध्यम से वापस भेज रहा हूँ । केशमेमो क्रमांक 222 ए दिनांक 25 फरवरी, 2017 है । बिल की झेराक्स कॉपी पत्र के साथ भेज रहा हूँ ।

आशा करता हूँ कि पत्र मिलते ही उपर्युक्त विषय पर आप ध्यान देंगे और नई पुस्तकें भिजवाने की व्यवस्था करेंगे ।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ ।

धन्यवाद !

भवदीय,
संतोष तिवारी ।

टिकट

प्रेषक,
संतोष तिवारी,
लक्ष्मी नगर,
अमरावती ।

सेवा में,
श्रीमान व्यवस्थापक जी,
शीतल बुक डिपो,
मंगलवार पेठ,
पूना ।

अथवा

सुंदर शर्मा
15 अ शिवपुरी,
नासिक ।
दिनांक - 5 मार्च, 2017

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाध्यापक जी,
तिलक विद्‌यालय, इंद्रापथ,
नासिक ।

विषय : तीन दिनों की छुट्‌टी के लिए प्रार्थना पत्र ।

माननीय महोदय,

मैं सुंदर शर्मा, कक्षा दसवीं 'अ' में पढ़नेवाला छात्र हूँ । मेरा अनुक्रमांक 20 है । हमारे कक्षा

अध्यापक श्री आर.पी.सिंह जी हैं। मेरी छोटी बहन पिछले कई दिनों से बीमार है । वह इस समय अस्पताल में भर्ती है । उसे अनिद्रा, रक्तचाप जैसी बीमारियों ने घेर रखा है । वह चल-फिर नहीं सकती है । पिताजी जरूरी काम से नगर के बाहर गए हैं । सोनू की देखभाल करने के लिए घर पर कोई नहीं है। इसलिए मुझे तीन दिन की छुट्टी की जरूरत है ।

अत: आपसे प्रार्थना है कि मुझे दिनांक 5 मार्च, 2017 से 7 मार्च, 2017 तक तीन दिन की छुट्टी प्रदान करने की कृपा करें । इन तीन दिनों में पढ़ाई का जो नुकसान होगा, उसे मैं पूरा कर लूँगा ।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ ।

धन्यवाद !

आपका आज्ञाकारी छात्र,
सुंदर शर्मा ।

टिकट

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाध्यापक जी,
तिलक विद्यालय,
इंद्रापथ,
नासिक ।

प्रेषक,
सुंदर शर्मा,
15 अ, शिवपुरी,
नासिक ।

2) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर लगभग 80 से 100 शब्दों में कहानी लिखकर उसे उचित शीर्षक दीजिए । **5**

मेहनत का फल

कहानी बहुत पुरानी है । रायगढ़ नाम का एक गाँव था । उसी गाँव में एक रायचंद्र नामक जमींदार रहता था । उसके पास खूब धन-दौलत और जमीन थी । उसकी जमीन पर नौकर - चाकर खेती करते थे । रायचंद्र कभी - कभी ही खेतों पर जाता था । धीरे-धीरे उसने अनुभव किया कि खेतों से मिलनेवाली आमदनी कम होती जा रही है । उसके मित्र विजय प्रताप ने सलाह दी कि तुम सैर करने के बहाने खेतों पर जाया करो ।

दूसरे दिन रायचंद्र ने खेतों पर जाने का सोचा । जब वह खेतों पर पहुँचा तो वहाँ कुछ नौकर काम पर आए ही नहीं थे । खेती के औजार भी गायब थे । उस दिन से रायचंद्र चौकन्ना हो गया । वह प्रतिदिन खेतों पर जाने लगा, खेतों की देखभाल करने लगा और अपनी देखरेख में नौकरों से काम करवाने लगा । वह खुद भी मजदूरों के साथ खेतों पर काम करने लगा । मालिक को अपने साथ काम करता देखकर नौकरों का भी उत्साह बढ़ गया । सारे नौकर मन लगाकर काम करने लगे । मन लगाकर काम करने से आमदनी बढ़ गई । इससे जमींदार को इस बात का एहसास हो गया कि मालिक को भी मजदूरों के साथ कभी-कभी काम करना चाहिए । इस प्रकार सबकी मेहनत से आमदनी बढ़ गई ।

सीख : इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि इंसान को हमेशा परिश्रम और लगन से काम करना चाहिए ।

3) **निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर पाँच ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर केवल एक वाक्य में हो ।** **5**

(1) बातचीत में निपुण होने की कला को कौन नहीं सीख सकता ?

(2) बातचीत में निपुणता प्राप्त करने के लिए सबसे पहले क्या करना चाहिए ?

(3) बातचीत में निपुण होने के लिए सहनशील होना क्यों आवश्यक है ?

(4) किसी की बात का प्रतिवाद कैसे करना चाहिए ?

(5) किसी भी क्षेत्र में सफल होने के लिए किस कला का सीखना जरूरी है ?

उ.6. **विज्ञापन : (लगभग 60 से 80 शब्दों में)** **5**

1)

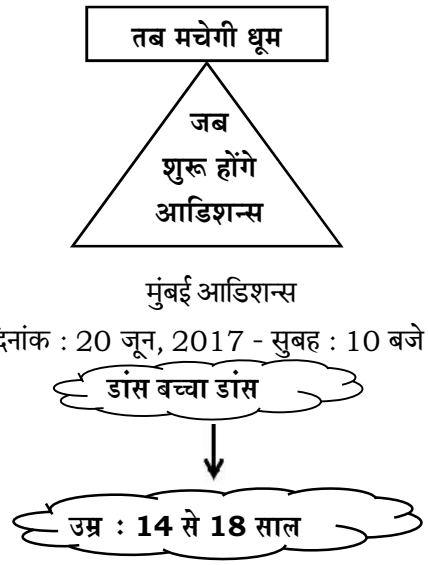

स्थान : केतकी स्कूल, राम नगर, घाटकोपर, मुंबई - 86.

संपर्क : 9945678634 / 9897564343

2) **स्वमत : (लगभग 60 से 80 शब्दों में)** **5**

आज हमें बढ़ती गर्मी, अकाल, सूखा आदि प्राकृतिक आपदाओं के साथ जूझना पड़ रहा है । यदि इन सभी पर रोक लगानी है तो हमें पेड़ लगाने चाहिए । प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम एक पेड़ तो लगाना ही चाहिए । तब जाकर हम वैश्विक ऊष्मा वृद्धि पर रोक लगा सकते हैं । पेड़ हमें फल, फूल, लकड़ी, छाँव एवं प्राणवायु देते हैं । यदि हम उनकी रक्षा करेंगे तो ही हमारा भविष्य उज्ज्वल बन सकता है । पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने में पेड़ हमारी मदद करते हैं । इन्हीं पेड़ों पर पंछी रहते हैं । वे हमारे साथी हैं । मानव ने पेड़ों की अंधाधुंध कटाई की है । अत: धरती का तापमान बढ़ रहा है । इसी कारण ओज़ोन-परत में छिद्र हो गया है । यदि उस छिद्र में वृद्धि होगी, तो संपूर्ण धरती सूर्य की पराबैंगनी किरणों का शिकार हो जाएगी । अत: ध्यान रहे कि पेड़ों की रक्षा यानी कि हमारी अपनी स्वयं की रक्षा। इसीलिए पेड़ लगाओ - देश बचाओ । इस नारे पर हमें अमल करना होगा ।

3) निबंध लेखन : (लगभग 60 से 80 शब्दों में) **5**

1)

एक अकाल पीड़ित की आत्मकथा

''का बरखा जब कृषि सुखानी ।
समय चूकि पुनि का पछतानी ।।''

सौंदर्य, प्रेम तथा संवेदनाओं से भरी प्रकृति कभी-कभी रौद्र रूप भी धारण कर लेती है । उसका क्रोध कोई भी रूप ले लेता है । अकाल प्रकृति के क्रोध का एक अति भयानक, हृदय विदारक, रूह कँपा देनेवाला रूप है ।

साथियों, आप समझ गए होंगे कि मैं कौन हूँ । जी हाँ, मैं एक अकाल पीड़ित हूँ, आप मेरी दर्दभरी व्यथा सुनना पसंद करेंगे ? ठीक है सुनिए, भारत जैसे कृषिप्रधान देश के लिए अकाल किसी भयंकर अभिशाप से कम नहीं। मेरे परिवार में मैं, मेरी पत्नी तथा दो बच्चे व मेरी बूढ़ी माँ थी ।

मेरा गाँव खुशहाल था । सब एक-दूसरे की मदद करते थे । लोगों का एक-दूसरे के घर आना-जाना, लेन-देन होता था किंतु किसी को क्या पता था कि खुशहाल गाँव पर अकाल का ग्रहण लग चुका है । सब लोग भीषण गर्मी में तपते हुए मेघराज का बेसब्री से इंतजार करने लगे । आसमान में काले बादल आए परंतु हल्की बूँदा-बाँदी के अलावा कुछ भी हाथ न लगा ।

दिन पर दिन और महीने के महीने गुजर गए किंतु बरखा रानी हम सबकी दुश्मन बनी हुई थीं । पूरा वर्ष इंतजार में बीत गया । किसानों के घरों में अन्न की कमी पड़ने लगी और महँगाई आसमान छूने लगी। लोग किसी तरह से एक-एक दिन मुश्किल से काट रहे थे । उम्मीद थी कि इस साल बरखा रानी के आते ही सारे दु:ख भाग जाएँगे परंतु विधाता को तो कुछ और ही मंजूर था ।

दूसरा साल आया । लोग भूख-प्यास से तड़पने लगे । इस वर्ष भी मेघराज ने धोखा दिया । बच्चे बूढ़े सब दाने-दाने के मोहताज हो गए । गायभैंस, बैल को भूख से बेहाल देखते ही आँखें बरसने लगती थीं, वे सिर्फ कंकाल बनकर रह गए थे ।

अचानक गर्मी बढ़ी। पूरे गाँव में महामारी, हैजा फैल गया । लोगों के घरों में न अनाज का टुकड़ा बचा था और न पानी । एक - एक बर्तन पेट की आग बुझाने में बिक गया, फिर भी पेट की आग जलती रही । लोग मंदिरों में, मस्जिदों में पूजा, प्रार्थना दुआ माँगते रह गए किंतु ऊपरवाले को दया नहीं आई । घर का घर महामारी की चपेट में आता गया और लोग मच्छर, मक्खी की तरह मरने लगे, साथ में जानवरों की भी वही हालत होती गई ।

होनी को भला कौन टाल सकता है ? आखिर एक दिन मेरा घर भी महामारी के चंगुल में आ गया । मैं चीखता-चिल्लाता रहा किंतु मेरी मदद कौन करता ? सबके सामने तो एक ही समस्या थी । मेरी आँखों के सामने मेरी माँ, पत्नी तथा दोनों मासूम बच्चे चीखते-बिलखते मौत के मुँह में समा गए ।

चारों तरफ महामारी का तांडव बढ़ता जा रहा था । गाँव के गाँव मौत के मुँह में समाते जा रहे थे । जिसे देखकर सरकार ने सुरक्षा व्यवस्था प्रारंभ की । जगह-जगह पानी का टैंकर, खाने का पैकेट तथा डॉक्टर के द्वारा लोगों का इलाज व दवाइयों का वितरण किया जाने लगा । चंद दिनों में महामारी पर नियंत्रण कर लिया गया तथा सरकार के द्वारा कुआँ, तालाब, नलकूप आदि की खुदाई की जाने लगी। 'मैं अभागा किस्मत का मारा' न जाने किन कर्मों का फल मुझे भुगतना पड़ा । जो अपने परिवार के साथ न जी सका, न मर सका । ऐसे जीवन से तो मृत्यु ही अच्छी थी ।

''समझौता गमों से कर लो ।
जिंदगी में गम भी मिलते हैं ।''

2) **मेरा प्रिय वैज्ञानिक** 5

भारत माँ का अमर सपूत,
माँ का मान बढ़ाने आया ।
परमाणु के शांतिपूर्ण उपयोग में,
अपना हाथ बढ़ाने आया ।

हमारे देश में कई महान वैज्ञानिकों ने जन्म लिया । जिन्होंने अपने कार्य से भारतदेश को उन्नति के शिखर तक पहुँचाया । मैं जिनके कार्यों से अत्यंत प्रभावित हूँ, वे हैं - डॉ. होमी जहाँगीर भाभा । ये मेरे प्रिय वैज्ञानिक हैं ।

जब पूरा विश्व सभी क्षेत्रों में प्रगति कर रहा था, परमाणु-ऊर्जा जब एक चर्चा का विषय था, उस समय भारत इस क्षेत्र में कहीं भी नहीं था । लेकिन तभी भारत माता के इस अमर सपूत ने अपने परमाणु ऊर्जा के ज्ञान की चकाचौंध से दुनिया को चकित कर दिया। आज भारत ने परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में जो कुछ किया, हमारे देश में जितने भी परमाणु - शक्ति स्टेशन हैं, वह डॉ. भाभा के सफल प्रयासों की वजह से हैं। हमारे देश में परमाणु-ऊर्जा कार्य की शुरुआत 1945 में डॉ. भाभा ने ही की थी। वे ही 'भारतीय परमाणु ऊर्जा कमिशन' के प्रथम सभापति थे । डॉ. भाभा का जन्म 30 अक्टूबर, 1909 को मुंबई में हुआ था । इनकी प्रारंभिक शिक्षा भी मुंबई में हुई । स्नातक होने के बाद वे उच्च शिक्षा के लिए कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय गए ।

अपनी पढ़ाई के दौरान उन्हें बहुत से वजीफे और मैडल प्राप्त हुए । कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में उन्होंने फर्मी और पौली जैसे वैज्ञानिकों के साथ काम किया । 1937 में भाभा ने कॉस्मिक किरणों के क्षेत्र में वॉल्टर हिटलर के साथ काम किया । अपने इस कार्य के लिए उन्हें बहुत प्रसिद्धि मिली। 1940 में वे भारत लौट आए । 1945 में डॉ. भाभा ने टाटा अनुसंधान संस्थान की स्थापना की । एक कुशल वैज्ञानिक होने के साथ डॉ. भाभा एक कुशल शासक भी थे । उनके कुशल नेतृत्व में भारतीय वैज्ञानिक परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में तेजी से प्रगति करने लगे । उनके इन्हीं प्रयत्नों के फलस्वरूप, 1945 में एशिया का पहला परमाणु रिएक्टर मुंबई के निकट ट्रॉम्बे में स्थापित किया गया ।

1955 में जेनेवा में हुए संयुक्त राष्ट्र की परमाणु के शांतिपूर्ण उपयोग के लिए हुई सभा का प्रतिनिधित्व भी डॉ. भाभा ने किया । डॉ. भाभाही पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने परमाणु बम पर रोक लगाने की पहल की थी । डॉ. भाभा अपनी योग्यता के बल पर ही पहले प्रधानमंत्री पंडित नेहरू और दूसरे प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री के वैज्ञानिक सलाहकार थे । डॉ. भाभा के संरक्षण में पहला परमाणु शक्ति स्टेशन तारापुर नगर में बनाया गया । 18 मई, 1964 को भारत का पहला न्युक्लियर संयंत्र पोखरन (राजस्थान) में डॉ. भाभा के अनुसंधान कार्य के फलस्वरूप स्थापित किया गया ।

कुल मिलाकर डॉ. भाभा की वैज्ञानिक सफलताएँ गिनी नहीं जा सकती । ये महान वैज्ञानिक 25 जनवरी, 1966 में एक वायु दुर्घटना की वजह से स्वर्गवासी हो गए । डॉ. भाभा के सम्मान में ट्रॉम्बे में स्थित परमाणु ऊर्जा संस्थान का नाम 'भाभा परमाणु अनुसंधान' कर दिया गया । डॉ. भाभा एक अच्छे कलाकार भी थे। उन्हें साहित्य और कला में विशेष रुचि थी । उनका जीवन अत्यंत सीधा और सरल था । वे एक अच्छे वक्ता

और मधुरभाषी थे । अपने इन महान उपलब्धियों और गुणों की वजह से न सिर्फ वे भारत के बल्कि पूरी दुनिया के चहेते थे । इस महान वैज्ञानिक की जितनी भी प्रशंसा की जाए वह कम है ।

''विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक थे वह,
नाम था - होमी जहाँगीर भाभा ।
अपने ज्ञान के बल पर जिसने,
जीत लिया था दिल दुनिया का ।''"

❖❖❖❖